न्यू फेरी वार्फ, मुंबई में अक्तूबर-दिसंबर के दौरान आनायकों द्वारा बम्बिल का असामान्य भारी अवतरण

हारपोडॉन नेहेरियस (हाम.) जिसको साधारणतया "बंबई डक" और स्थानीय लोगों द्वारा बोम्बिल कहता है, का भारत के उत्तरपश्चिम तट के कारीगरी मछुआरों की जीविका से गहरा संबन्ध है क्यों कि भारत के बम्बिल उत्पादों का 90% इस क्षेत्र का योगदान रहता है। इसकी पकड के सिंह भाग का अवतरण महाराष्ट्र के सत्पति-दहनु क्षेत्र और गुजरात के जफराबाद-नवाबन्दर क्षेत्र में किया जाता है। सितंबर से मई तक लंबित बम्बिल मात्स्यिकी का मौसम अक्तूर-दिसंबर के दौरान उच्च देखा जाता है।

बम्बिलों का विदोहन 40 मी तक की गहराई से डोल जाल के जरिए किया जाता है। कुछ सालों से डोल जालों में बम्बिलों का अवतरण एक अधोगामी प्रवणता दिखाने पर भी न्यू फेरी वार्फ में आनायकों में इसकी पकड बढ गयी है। पकड में बडी मछलियाँ (90 से 315 मि मी) प्राप्त होती है और मत्स्यन तल गुजरात की सीमा तक के उत्तरपश्चिम तट देखा जाता है।

महाराष्ट्र में पिछले दस सालों से बम्बिल पकड में घटती की प्रवणता दिखायी पडती है। पिछले पाँच सालों में बम्बिल की पकड में वृद्धि देखी गयी महाराष्ट्र के एकमात्र अवतरण केंद्र न्यू फेरी वार्फ है। इसका प्रमुख कारण जफराबाद-नवाबन्दर क्षेत्र में इस मात्स्यिकी के लिए 30-40 मी की गहराई में आनायकों का प्रचालन है। न्यू फेरी वार्फ में बम्बिल अवतरण सासून डॉक और वेरसोवा की तुलना में उच्च होता है। पिछले तीन सालों में

रिपोर्टर

के.बी. वाग्मेयर, सुजीत सुन्दरम और जे.डी. सारंग
सी एम एफ आर आइ मुंबई अनुसंधान केंद्र, मुंबई, महाराष्ट्र

न्यू फेरी वार्फ में बम्बिल की आकलित पकड वर्ष 2001 की अक्तूबर-दिसंबर अवधि के 2,175 टन से वर्ष 2003 की समान अवधि में 4,273 टन में बढ गयी और पकड प्रति एकक प्रयास ने भी क्रमश: 339.84 कि ग्रा/मत्स्यन से 549.33 कि ग्रा/मत्स्यन में बढती दिखायी। दिसंबर '03 की माहिक पकड प्रति मत्स्यन 684.62 कि ग्रा और कुल आकलित पकड में 18.53% के योगदान के साथ 1797 टन पर उच्च थी। (चित्र - 1)

पहले बम्बिलों को सुखाकर विपणन करते थे। लेकिन आज ताज़े बम्बिलों के लिए उच्च माँग है। कफ पारडे, वोरली, वेरसोवा, खारदन्दा, माध, गेरेयी, उट्टन, बासीन कोल्लिवाडा, वसाई, अर्नाला और सत्पति जैसे क्षेत्रों में बाम्बिलों को सुखाने के लिए निर्मित लकडी का विशेष प्लाटफोर्म आज भी चालू है।

बम्बिलों को इस अवधि में प्रति कि ग्रा 10/- रु पर बिक दिया गया। पकड के 80% सुखाने के लिए ले गयी और शेष 20% स्थानीय बाज़ार में ताज़ी अवस्था में बेच दी गयी।

बम्बिल पकड को अच्छी तरह धोकर शीघ्र ही शुष्क हो जाने के लिए आंतडियाँ निकालती है। धूप में सुखायी गयी

चित्र-1 बडे बांस टोकरियों में भरी गई बम्बिल पकड

मछलियों का विपणन तीन प्रकार याने कि स्थानीय अवतरण केंद्रों के व्यापारियों द्वारा (40%), सेवरी और मारोल जैसे सूखी मछली बाज़ारों द्वारा (40%) और अन्य खुदरा बाज़ारों द्वारा (20%) किया जाता है।

न्यू फेरी वार्फ में अक्तूबर-दिसंबर '03 के दौरान उच्च पकड 22-10-03 (198 टन), 7-11-03 (130 टन) और 5-12-03 (153 टन) को रिकार्ड की गयी थी। 5-12-03 को अवतरण किये गये नमूने 90 मि मी से 200 मि मी तक के आकार रेंच में छोटी थी। इस पकड को अवतरण केन्द्र में ही प्लास्टिक एवं अन्य बडी टोकरियों में भरकर सुखाने के लिए कफ परेडे, वेरसोवा, वोरली, वसाई और अर्नाला को ले जाती है।

बम्बिल आनाय मत्स्यन के लिए लक्षित जाति नहीं है। फिर भी आनायन के बाद वापस आते समय ये डोल जाल तलों

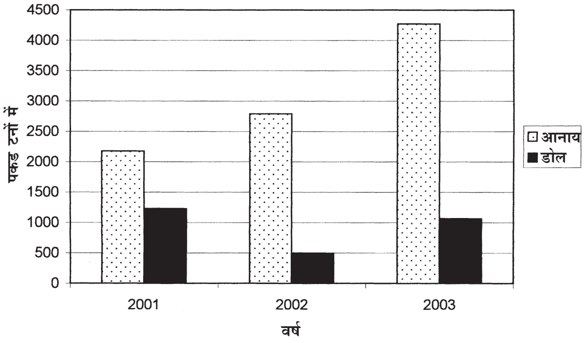

चित्र-2 बम्बिल की आनाय और डोल पकड

में आनायन करते है। उनकी इस प्रवृत्ति से डोल जालों में बम्बिल पकड अत्यधिक गिर जाती है जिसका प्रभाव उट्टन, बासीन कोल्लिवाडा, अर्नाला और सत्पति के परंपरागत डोल जाल मात्स्यिकी में पडता है। अक्तूबर-दिसंबर की अवधि के दौरान न्यू फेरी वार्फ से आनाय के ज़रिए और अर्नाला से डोल के ज़रिए प्राप्त पकड चित्र -2 में तुलना केलिए दी गयी है।

वेरावल में बम्बिल की नयी उपस्थिति

गभीर सागर मात्स्यिकी संपदाओं के लिए किए गए अन्वेषणात्मक सर्वेक्षण से यह व्यक्त हो गया कि वेरावल के उत्तर अरब सागर की अनन्य आर्थिक मेखला में लगभग 275-310 मी. की गहराई में हार्पोडोन वंश की मछली जाति मौजूद है, पहले इनकी रिपोर्ट नहीं की गई है। ई एक्स पी ओ आनाय जाल द्वारा इन्हें पकडा गया। पहले उत्तर अरब सागर से केवल *एच. निहेरियस* की रिपोर्ट की गयी थी। इसकी अपेक्षा नयी जाति छोटा आकार (220 मि.मी.) और बहुत छोटा अंसीय पख (9.4-11.1% की मानक लंबाई) वाली थी। डी एन ए बारकोडिंग (माइटोकोन्ट्रियल जीन साइटोक्रोम ओक्सिडेस सबयूनिट 1 के सी ए 650 बी पी क्षेत्र का अनुक्रमण) और फाइलोजेनिटिक विश्लेषण से यह प्रमाणित हुआ कि नई जाति *हार्पोडोन* जाति की मछली है, *एच. निहेरियस* की नहीं।

वेरावल से संग्रहित *हार्पोडोन* जाति